अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अप्रैल-2024

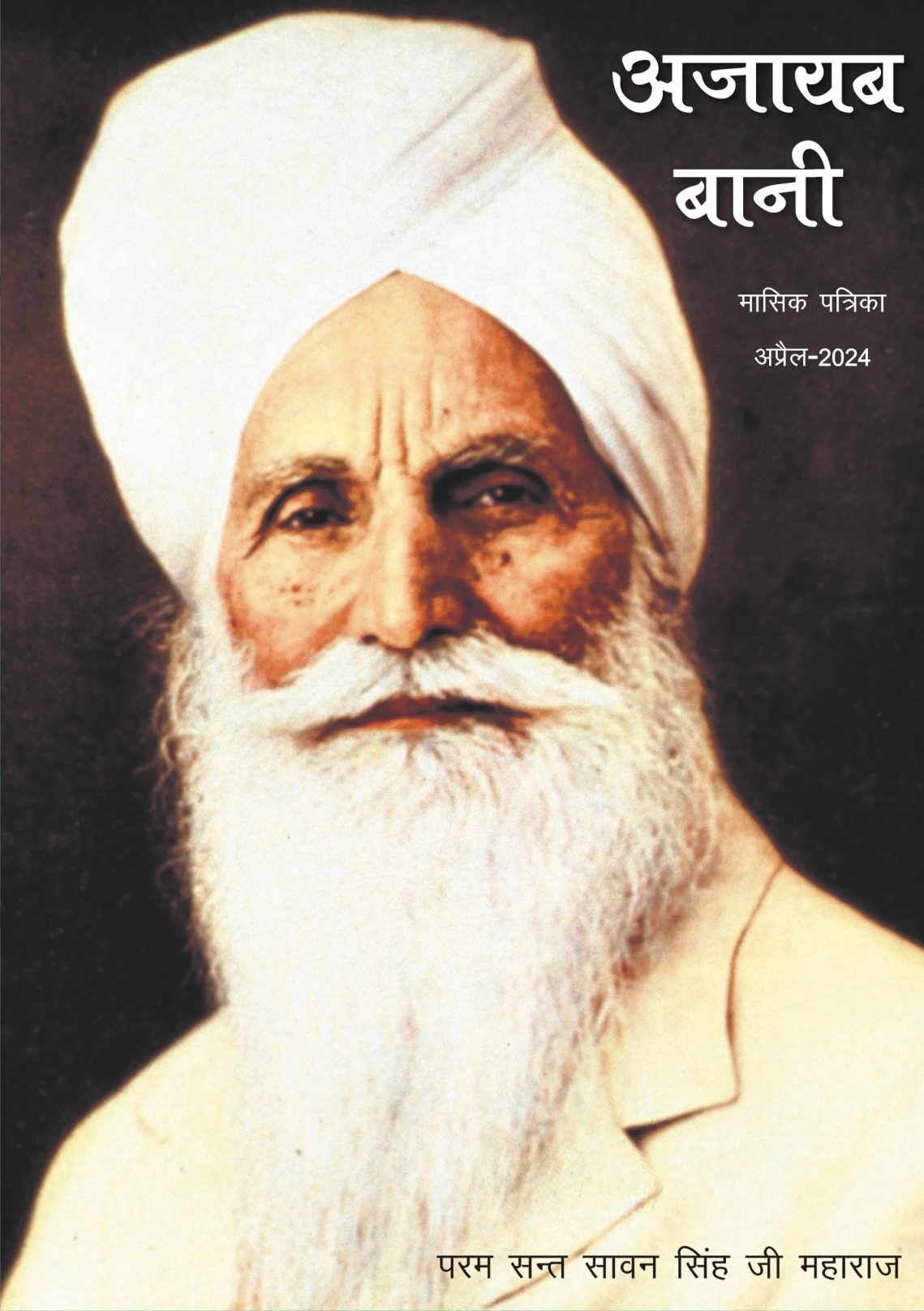

परम सन्त सावन सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–इक्कीसवां	अंक–बारहवां	अप्रैल–2024

2

एक शब्द

सावन शाह जी आओ

3

एक संदेश

परमात्मा का दरवाजा

5

सतसंग – बाबा सावन सिंह जी महाराज

मोह का अंधकार

21

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर

29

परम सन्त अजायब सिंह महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

पवित्रता

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम**
16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा**
99 50 55 66 71
उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **ज्योति सरदाना**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 265 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

सावन शाह जी आओ

सावन शाह जी आओ, दर्श दिखाओ,
कई जन्मा दे रोग मिटाओ x 2

1 दर्श बिना सानूं, चैन ना आवे,
इक–इक पल, युग बीत दा जावे x 2
काल दी नगरी चों, आण बचाओ,
कई जन्मां दे.....

2 मैं गुनाहगार तूं, बक्शनहारा,
समझो यतीम आ, देवो सहारा x 2
बेड़ी मझधार चों, पार लगाओ,
कई जन्मां दे.....

3 डाकु लुटेरे, फिरन चुफेरे,
दया करो दाता, जीव हां तेरे x 2
काल दे पंजे चों, आण छुड़ाओ,
कई जन्मां दे.....

4 गरीब 'अजायब' दी सुण अरजोई,
तेरे बिना किते, मिलदी ना ढोई x 2
सावन शाह जी आओ, देर ना लगाओ,
कई जन्मां दे.....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा कार्यक्रम के शुरु में दिया गया संदेश

परमात्मा का दरवाजा

1 जुलाई 1980 अमेरिका

मैं सबसे पहले उस परमात्मा कृपाल का धन्यवाद करता हूं जो कभी इंसान का चोला धारण करके संसार मंडल में आए। यह शरीर जो आपके सामने बैठा है, उन्होंने इसे प्यार का सबक दिया।

मैं दूसरे टूर पर भी अपना कोई मिशन लेकर नहीं चल रहा हूँ, यह सिर्फ उस कृपाल का ही मिशन है। मुझे जो प्यार मेरे गुरु कृपाल से मिला, मैं आप सबके साथ वही प्यार बांटने के लिए आया हूं। उन्होंने कृपाल के रूप में आकर हम पर दया की और हमें बताया कि मैं तुम्हारे अंदर कृपाल के रूप में बैठा हूं। आप अपने ख्यालों को बाहर से हटा कर अंदर आकर मुझसे मिलें। उन्होंने न सिर्फ हमें यह बताया बल्कि अपने घर वापिस आने का निमंत्रण भी दिया। हमें भी चाहिए कि हम बाहर से ख्यालों को हटाकर उनसे अंदर मिलने की इच्छा प्रकट करें और अंदर जाकर उनसे मिलें।

मैं जहां भी गया मुझे बहुत प्यार मिला। इस टूर में ज्यादा आत्माएं काल के जाल से निकल रही हैं, लोग नामदान में बहुत रूचि रख रहे हैं। मैं एक बार फिर आप लोगों से यहां सन्तबानी आश्रम में मिलकर बहुत खुश हूं। मैं इस धरती को नमस्कार करता हूं क्योंकि मेरे प्यारे कृपाल यहां अपने पवित्र चरण डालकर गए हैं।

इस टूर के दौरान रसल और जूडिथ पर्किन्स बहुत मदद कर रहे हैं और काफी मेहनत करके सेवा कर रहे हैं। मैं इनकी सेवा का बहुत आभारी हूं और इनका धन्यवाद करता हूं। आप लोग जानते ही हैं कि हर रोज़ सफर करना, सामान लाने ले जाने में रसल बहुत मेहनत कर रहा है। कोलंबिया में कैंट और डेविड ने जाकर बहुत मदद की, हम उनके भी बहुत आभारी हैं।

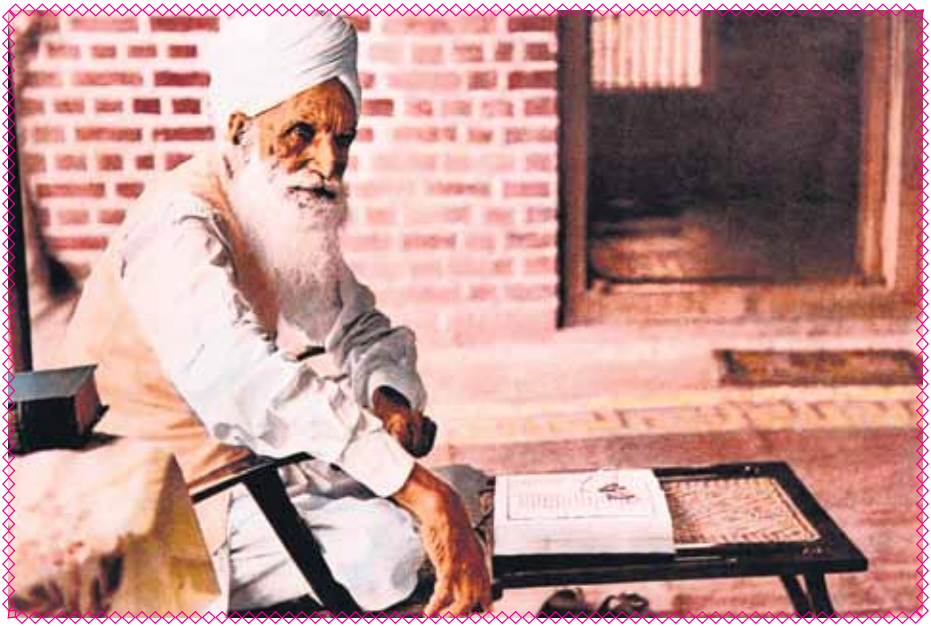

आप जानते हैं कि हम सब यहां किस मकसद के लिए इकट्ठे हुए हैं? हमने उस मकसद को आंखों के सामने रखना है, वह मकसद यह है कि हम ज्यादा से ज्यादा भजन–सिमरन करें, आश्रम के अंदर अनुशासन बनाकर रखें और ज्यादा से ज्यादा एकाग्र हों।

आप जानते हैं कि सिमरन के साथ मन और आत्मा एकाग्र होते हैं, ध्यान के साथ आत्मा ठहरती है और शब्द इसे ऊपर खींचता है। मन को खाली न रहने दें, इसे सिमरन में लगाए रखें क्योंकि मेहनत करके ही हम कामयाब हो सकते हैं। हम जब अभ्यास में बैठे होते हैं तो **परमात्मा के दरवाजे** पर बैठे होते हैं अगर **परमात्मा दरवाजा** न खोले तो इसका मतलब है कि हम अभी तैयार नहीं हैं। हमारा मन हमें बता भी देता है कि अभी हम तैयार नहीं हैं लेकिन हमने दरवाजे पर बैठना है। हम जो अभ्यास करते हैं, वह परमात्मा के दरवाजे पर बैठना ही होता है।

***

सतसंग–बाबा सावन सिंह जी महाराज

मोह का अंधकार

स्वामी जी महाराज की बानी

जग में घोर अंधेरा भारी। तन में तम का भंडारा।।
स्वपन जाग्रत दोनों देखी। भूल भुलइयाँ धर मारा।।

तस्वीर के दो पहलू होते हैं, एक आगे का और दूसरा पीछे का। आगे के हिस्से में खूबसूरत फोटो होती है जबकि पिछले हिस्से में गत्ता फिट किया होता है, इसी तरह दुनिया के भी दो पहलू हैं। एक पहलू में हम दुनिया में लोगों को खाते–पीते और दुनिया का आनन्द लेते हुए देखते हैं जबकि दूसरे पहलू में दुख–दर्द, बीमारियां और मौत है।

संसार जल, पृथ्वी और हवा तीन भागों में बँटा हुआ है। ये सब हमारे आगे विनाश का दृश्य और तबाही का मंजर पेश करते हैं, जहां जीव दूसरे जीव–जंतुओं को खाते हैं। पानी में बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है। धरती पर शेर–चीतों का आहार शाकाहारी भेड़–बकरियां हैं। हवा में चील और बाज छोटे पक्षियों पर झपट्टा मारते हैं, उन पक्षियों का आहार कीड़े–मकोड़े होते हैं।

गुरु नानकदेव जी ने अनोखे तरीके से बताया है कि सैंकड़ो साल पहले इस संसार में आत्मा के बिना कोई अनाज नहीं था, अनाज में भी आत्मा है। वेद–शास्त्र भी इस बात पर जोर देते हैं कि आत्माएं पितृ लोक और दिव्य लोक से गुजरने के बाद नीचे आती हैं, सूरज और चन्द्रमा की किरणों द्वारा अनाज में प्रवेश करती हैं। इस तरह फिर से इंसानी शरीर में जाने का रास्ता ढूंढ लेती हैं।

अगर हम माइक्रोस्कोप से पानी की एक बूँद को देखते हैं तो उसमें हमें तैरते हुए, उछल कूद करते हुए बहुत से कीटाणु मिलेंगे। हम जिस वायु

मंडल में रह रहे हैं, साँस ले रहे हैं तो कीटाणुओं के एक झुंड को हम हर एक साँस के साथ अनगिनत बार न चाहते हुए भी मार रहे हैं।

जब जीव जीवन जीने के लिए दूसरे जीवों को खाते हैं तो मीट खाने में क्या पाप है? सन्त महात्माओं ने इसे इस तरह से समझाया है कि संसार पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश पाँच तत्वों से बना है, इसके आधार पर रचना को भी पाँच भागों में बाँटा जा सकता है।

पहला–खनिज पदार्थ और वनस्पति जिनमें सभी तरह के पेड़–पौधे, सब्ज़ियाँ, घास–फूस आते हैं, इनमें पानी की मुख्य भूमिका है। बाकी चार तत्वों का इतना महत्व नहीं है। जैसे 40 सेर पालक को अगर सूरज की गर्मी में सुखाया जाए तो केवल 4 सेर ही बचेगी। 90 प्रतिशत पानी भाप बनकर उड़ जाएगा, केवल 10 प्रतिशत पालक के पत्ते बचेंगे।

दूसरा–कीड़े, मकौड़े और रेंगने वाले जंतु जिनमें छिपकलियाँ, साँप आदि शामिल हैं। इनमें दो तत्व हवा और अग्नि का महत्व है जबकि बाकी के तीन तत्वों का ज़्यादा महत्व नहीं है।

तीसरा–हवा में उड़ने वाले पक्षी हैं जिनमें जल, अग्नि और वायु तत्व मौजूद होते हैं जबकि बाकी के दो तत्वों का ज़्यादा महत्व नहीं है।

चौथा–चार पाँव वाले जानवर जैसे भेड़–बकरियाँ, गाय–भैंसे, घोड़े और ऊँट। इनमें वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी तत्व मौजूद हैं लेकिन आकाश नहीं हैं इसलिए ये अक्ल से अंधे होते हैं, इनमें सोचने समझने के क्षमता नहीं होती।

विकास की इस क्रिया में आखिर में इंसान आता है। इंसान, परमात्मा की महिमा का ताज है। इसमें पाँचों तत्व सही अनुपात में मौजूद हैं जो इंसान को पूर्ण बनाते हैं। इस रचना में इंसान सबसे ऊपर है, इंसान सही और ग़लत का निर्णय ले सकता है। इन सबमें आप पाप में असामान्यता के सिद्धांत को देखेंगे, इंसान को मारना सबसे बड़ा अपराध है जिसकी

सज़ा मौत है। इस तरह से इंसान का मारने से लेकर रोज़मर्रा की ज़रूरत के लिए फूल और सब्ज़ियाँ तोड़ने तक पाप नीचे स्तर पर चला जाता है। इसलिए सन्त शाकाहारी भोजन के लिए ज़ोर देते हैं। बाकी की चार श्रेणियों में मन संवेदनशील है। किसी इंसान, भेड़, पक्षी या कीड़े को मारने की कोशिश करते हैं तो वह दर्द से छटपटाता है, दर्द सहन करते हुए अलग–अलग तरह से रोता है। इसलिए सन्त हमें कम से कम पाप का बोझ उठाने की सलाह देते हैं क्योंकि हम भोजन के बिना नहीं रह सकते। कुछ ऐसे भी लोग है जो फलाहारी और पवनाहारी भी होते हैं। क्राइस्ट ने कहा है, ''केवल रोटी खाने से इंसान जीवित नहीं रहता।''

जीवन में हमारी आत्मा का लक्ष्य शारीरिक चेतना से ऊपर उठने की कला को सीखना और उसका अभ्यास करना है। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि संसार में अज्ञानता के अंधेरे के अलावा कुछ नहीं है। प्रकृति के दाँत और पंजे लाल हैं। इंसानों में भी अमीर और गरीब, ऊँचे और नीचे का संघर्ष लगातार चल रहा है। इंसान अपने लालच में भूल गया है कि वह कितना बेरहम हो गया है। उसने कभी परमात्मा का प्रकाश नहीं देखा और अंदर–बाहर अंधकार में टटोल रहा है।

इस भौतिक संसार में अन्याय और बेदर्दी का अंधकार है। जब हम आँखें बंद करके अंदर टकटकी लगाकर देखते हैं तो वही अभेद अंधकार हमारा स्वागत करता है। यह अंधकार दुनिया और दुनियावी चीज़ों के मोह से पैदा होता है। मैंने ध्यान से जागृत और सपने की स्थिति को देखा और पाया कि उनके मायावी जाल से निकलने का कोई रास्ता नहीं।

इंसान हमेशा अस्तित्व की तीन में से एक स्थिति में होता है – जागृत अवस्था, स्वप्न अवस्था और गहरी नींद। चाहे वह किसी भी स्थिति में हो, वह एक अंधेरी गली की तरफ़ जा रहा है। एक भूल–भुलैया जिससे निकलने का कोई साफ़ रास्ता दिखाई नहीं देता। हम जिस दुनिया में

रह रहे हैं वह एक अंधेरी काल कोठरी से कम नहीं है। जिसमें मुश्किल और टेढ़े–मेढ़े रास्तों की भूल–भुलैया है। पूरी रचना को चौरासी लाख प्रजातियों में बाँटा जा सकता है। जिनमें तीस लाख वनस्पति, सत्ताईस लाख कीड़े–मकौड़े और रेंगने वाले जंतु, चौदह लाख हवा में उड़ने वाले पक्षी, नौ लाख ज़मीन और पानी में रहने वाले जानवर, चार लाख भूत–प्रेत, भगवान और इंसान आते हैं।

इंसान चाहे स्वर्ग में हो या नर्क में या भौतिक मण्डल में, यह सब एक भूल–भुलैया जैसा है। विशाल ब्रह्मांड में एक जेल की कोठरी जैसा है, जहां से निकलने का कोई रास्ता नहीं। हम चाहे कितनी भी कोशिश करें, हाड़–मांस के शरीर में से नहीं निकल सकते। हममें से कुछ इस शरीर में से निकलना ही नहीं चाहते क्योंकि हम जानते ही नहीं कि आज़ादी क्या होती है? गटर में रहने वाला कीड़ा गटर की गंदगी में ही खुश है, वह उसी का स्वाद लेता है और हमेशा वहीं रहना चाहता है। हमारे साथ भी ऐसा ही है क्योंकि हमने कभी आध्यात्मिक परम सुख का स्वाद ही नहीं चखा। हममें से ज़्यादातर के लिए यह संसार परम आनन्द की जगह है, हम दूसरी दुनिया के उस अंजान परम सुख की परवाह नहीं करते।

जीव अजान भया परदेसी। देस बिसर गया निज सारा।।
फिरे भटकता खान खान में। जोनि जोनि बिच झख मारा।।

आत्मा सतनाम के समुन्द्र की एक बूँद है लेकिन बदक़िस्मती से मन और इंद्रियों के लगातार संपर्क में आकर उसने अपने आपको दुनिया के साथ इतना जोड़ लिया है कि वह अपनी विरासत को भूल गई है जिस पर उसका जन्म से अधिकार है। अब इंसान इस अनजान दुनिया और उसके लोगों, सगे–संबंधियों, दोस्तों और संगी–साथियों में इतना रम गया है कि वह अपनी आध्यात्मिक स्वभाव और उत्पत्ति को भूल गया और अनगिनत योनियों में जन्म ले रहा है।

आत्मा एक स्तर से दूसरे स्तर पर, कभी पेड़, कभी कीड़ा, कभी पक्षी और कभी जानवर बनकर सृष्टि के अलग–अलग स्तर पर ऊपर–नीचे घूम रही है। हम जैसा बोएगें वैसा पाएंगे। श्रीमद भागवत में भगवान श्री कृष्ण ने एक कीड़े की तरफ़ इशारा करते हुए अपने भक्त उधो को समझाया कि यह कीड़ा कई बार सृष्टि का रचयिता ब्रह्मा और कई बार स्वर्ग का देवता इंद्र बना लेकिन अब यह कीचड़ से बाहर नहीं आना चाहता।

गुरु नानक देव जी भी सृष्टि के अलग–अलग स्तरों और रूपों में जन्म और मृत्यु के अनगिनत चक्रों के बारे में बताते हैं कि पहले इंसान इस बंधन से मुक्ति पाने के लिए आत्मा पर ध्यान दे। केवल इसी रूप में कोई भी इंसान शरीर के बंधन से बाहर निकलकर परमात्मा से मिल सकता है और परमात्मा के साथ जुड़कर एक हो सकता है।

परमात्मा को पाने के लिए अपना घर–बार, परिवार छोड़ने की ज़रूरत नहीं और न ही समाज से रिश्ता–नाता तोड़ना चाहिए। बस उसे अपने अंदर का दरवाज़ा खटखटाना है। इस संसार में रहते हुए भी आप बाहर निकल सकते हैं।

दम दम दुखी कष्ट बहु भोगे। सुने कौन अब बहु हारा।।
करे पुकार कारगर नाहीं। पड़े नर्क में जम धारा।।

भौतिक जीवन दुखों से भरा हुआ है, शायद ही संसार में कोई इंसान सुखी होगा। हर इंसान को कोई न कोई दुख है। किसी की बेटी विधवा है, किसी का बेटा दुखी है। आप अपने आस–पास देखें, हर रोज़ हज़ारों भेड़–बकरियों को काटा जा रहा है, लाखों मुर्गियों को भूना जा रहा है। क्या ऐसी कोई अदालत है, जहां जाकर वे अपील कर सकें?

सब–डिवीज़नल ऑफिसर होने के नाते, मैंने भार से लादे हुए ऊँटों को ब्रिटिश सैनिकों की लाठियों की बरसात सहते हुए, खड़ी पहाड़ियों

पर चढ़ते हुए और थककर लड़खड़ाते हुए देखा है। इसी तरह किसान भी आधी रात को बैलों से हल जुतवाते हैं, उन्हें बेरहमी से लाठियों से मारते हैं फिर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए उनका मुँह बंद कर दिया जाता है। क्या हमने कभी सोचा है कि हम इन बेज़ुबान जानवरों को कितना कष्ट दे रहे हैं, वे दर्द से कराहते हुए बिना बोले हमारे दिए कष्टों को सहन करते हैं। उनका दुख सुनने वाला कोई नहीं और न ही उनके गहरे दुख में कोई उनसे सहानुभूति रखने वाला है।

बेचारे पशु–पक्षी दर्द से चिल्लाते हैं लेकिन सब बेकार है। कसाई का चाकू बिना रुके, बिना पछतावे के उनकी आँतों को चीरता रहता है। इस तरह इंसान नर्क के मार्ग पर चल पड़ता है और ये सब काम ऐसे ही चलते रहते हैं। बहुत से जन्म लेने के बाद आपको ऊपर पहुँचने का रास्ता मिल जाता है और इसे पाने के बाद आप मन–इंद्रियों के गुलाम बन गए हैं।

भटक भटक नर देही पाई। इन्द्री मन मिल यहाँ मारा।।

कई युगों के लंबे और कष्टों भरे सफ़र के बाद किसी आत्मा को इंसानी शरीर मिलता है। हमें इंसानी जामे के रूप में एक बहुत बड़ा अधिकार मिला है क्योंकि इसमें ही आत्मा जन्म–मरण के अंतहीन चक्कर से मुक्ति पा सकती है। लेकिन अफ़सोस! जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता है, दुनिया की ज़ंजीरे उसके पास आ जाती हैं। इंद्रियाँ मन पर हावी हो जाती हैं और मन बुद्धि पर हावी हो जाता है।

बेचारा इंसान इधर–उधर ही घूमता रहता है, उसमें इन्हें कंट्रोल करने की शक्ति नहीं होती। इस दया की स्थिति में दिव्य प्रकाश की एक चिंगारी से आत्मा मन की दास बन जाती है। यह दुखद स्थिति वैसी ही है जैसे एक राजकुमारी की शादी किसी राजकुमार से होनी थी लेकिन वह भंगी से प्यार कर बैठी और उसे अपना पति बना लिया। आत्माओं को परमात्मा से मिलना होता है लेकिन वे इंद्रियों में फँसे मन को अपना साथी बना लेती हैं।

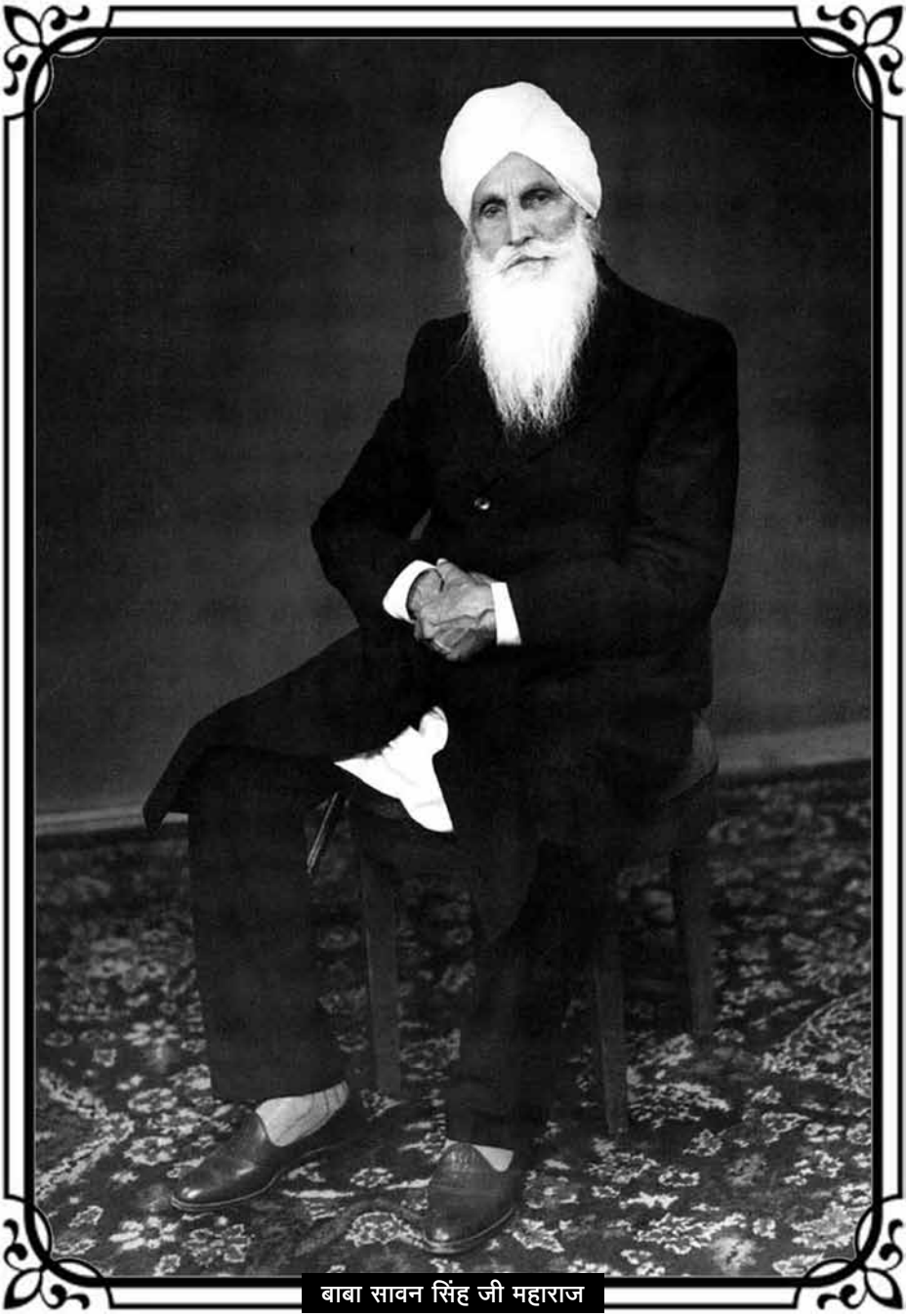

बाबा सावन सिंह जी महाराज

एक पल के लिए शरीर के उन अंगों पर नज़र डालते हैं जो अलग अलग इंद्रियों का घर हैं। शरीर की गंदगी बाहर निकालने के लिए नौ द्वार– आँखें, नाक, कान, मुँह और नीचे की दो इंद्रियाँ हैं। दुनियावी चीज़ें जान बूझकर किसी न किसी इंद्री को आकर्षित करती हैं। इंद्रियाँ मन को सीधा अपील करती हैं और मन असहाय आत्मा को ऊँचे मंडलों से निचले मंडलों की गहराइयों तक खींचकर ले जाता है।

हमारी किसी देश या धर्म से कोई दुश्मनी नहीं है। मन ही है जो नफ़रत और वैर–भाव की ऊँची दीवारें खड़ी कर देता है। मन ही इंसान और परमात्मा के बीच की अभेद दीवार है। जैसा ऊपर कहा गया है कि आत्मा सतनाम के सागर की एक बूँद है। दुनिया में फैलाव से उसने परमात्मा के राज्य को खो दिया लेकिन इससे उल्टा बदलाव करके वह फिर से एक बार खोया हुआ परमात्मा का राज्य प्राप्त कर सकती है।

अगर आत्मा का प्रकाश बुद्धि का मार्गदर्शन करे, जब बुद्धि जाग जाए और वह मन का नेतृत्व करे तो मन कभी इंद्रियों के कहने में आकर बाहर नहीं जाएगा। समय के साथ इंद्रियाँ दुनियावी चीज़ों में आनंद पाने की इच्छा को खो देंगी, इससे परमानंद मिलेगा। इसलिए सच्ची शांति इच्छा रहित होने में है क्योंकि वासना सभी बुराइयों का मूल कारण है।

सतगुरु संत कहें बहुतेरा। राह बतावें दस द्वारा।।

सन्त–महात्मा, पीर–पैगंबर बार–बार हमें अपने अनुभव से इस दुनिया की प्रबल भूल–भुलैया से बाहर निकलने का रास्ता बताते हैं। वह रास्ता सरसों के दाने से भी ज़्यादा छोटा है और आत्मा को सचखंड में प्रवेश प्रदान करता है। हमने न घर छोड़ना है, न दुनियावी संबंध तोड़ने हैं। बस दसवें केंद्र पर एकाग्रता की जरूरत है, वहां आत्मा बैठी है जो आँखों के बीच ठीक पीछे है। हमने अपने शरीर के नौ द्वारों को बंद करना है जिनसे हमारा ध्यान लगातार बाहर जाता है फिर आँखों के बीच केंद्र बिंदु–

दसवें द्वार पर लाना है। यहां से भक्ति का सफर शुरू होता है और महान सच्चखंड तक जाता है।

कुछ सर्जन ब्रह्म–पारब्रह्म या सच्चखंड के अस्तित्व पर प्रश्न उठा सकते हैं। उनमें से किसी ने भी इंसान के शरीर का ऑपरेशन करते समय इनका अनुभव नहीं किया। शायद वे यह नहीं जानते कि ऑपरेशन के समय वे केवल इंसानी शरीर के मांस और हड्डियों पर काम करते हैं, न कि अपने मरीज़ों के सूक्ष्म और कारण मंडलों पर। आध्यात्मिक ज्ञान मन के सूक्ष्म पर्दे के पीछे है इसलिए ऑपरेशन के उपकरणों की पहुँच से परे है। जब इंद्रियाँ वश में हो, मन शांत हो, बुद्धि काम न करे तभी कोई इंसान अज्ञानता के पर्दे को उठाकर उस पार देख सकता है।

सभी पूर्ण सन्त–महात्माओं ने, चाहे वे हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख या ईसाई हैं, यही परम सत्य बताया है कि जब तक आप इस जीवन को नहीं खोते, आपको परम जीवन नहीं मिल सकता। क्राइस्ट ने कहा है, ''खुद का ज्ञान आध्यात्मिकता की कुंजी है।'' पूर्वजों ने हमेशा इस पर बहुत ज़ोर दिया है। उन्होंने स्पष्ट रूप से घोषणा की थी, 'खुद को जानो'। जीवन का सबसे पहला ज़रूरी उपदेश परमात्मा के ज्ञान से पहले आत्मा का ज्ञान है।

हालाँकि हम पूरी तरह से इस दुनिया में खो गए हैं और नहीं जानते कि शारीरिक दुनिया से परे हमारा कोई अस्तित्व है या नहीं। मन एक चौकीदार की तरह आत्मा पर पहरा रखता है और आत्मा को एक पल के लिए भी कुछ और सोचने नहीं देता। यही कारण है कि हम एक पल के लिए भी भजन–अभ्यास में नहीं बैठ सकते, खुद से बात नहीं कर सकते।

हम बाहरी रीति रिवाजों जैसे धार्मिक सभाएं, भजन–कीर्तन, गीत गाने में बहुत समय बिता देते हैं। एकाग्रता मन को शांत करने और सचखंड में प्रवेश का एकमात्र उपाय है, उसे हम बुरी तरह अनदेखा कर देते हैं।

बचन न माने कहन न पकड़े। फिर फिर भरमें नौ द्वारा।।

सन्त–महात्मा हमारे ऊपर बहुत दया करके हमें दसवें द्वार से बाहर निकलने का रास्ता बताते हैं लेकिन हम उनकी बात नहीं सुनते और उनके कहे पर ध्यान नहीं देते। हम हमेशा मन और इंद्रियों के ज़रिए अज्ञानता वश भटकते रहते हैं। यह स्थिति आग लगी भेड़ों के बाड़े जैसी है। चरवाहा भेड़ों को आग में से निकालने की पूरी कोशिश करता है लेकिन वे बाड़े से बाहर निकलने की जगह बाड़े में मरना ही पसंद करती हैं।

फोकट धर्म पकड़ कर जूझे। बूझे न शब्द जुगत पारा।।

हम दिव्य संगीत को पकड़ना नहीं चाहते। हम तीर्थ यात्रा, परिक्रमा करना, जप–तप, मंदिरों, मस्जिदों और चर्चों में पूजा करने में लग जाते हैं, ये काम इंद्रियों के स्तर पर होते हैं और उस पेड़ की तरह है जिस पेड़ पर कभी फल नहीं लगता। हम शब्द धुन के ज़रिए असलियत को समझने की कोशिश नहीं करते, जो हमें हमारे शरीर और मन की जेल से निकाल कर ऊपर पवित्र मंडलों में ले जा सकती है।

पानी मथे हाथ कुछ नाहीं। क्षीर मथन आलस भारा।।

दूध को मथ कर मक्खन निकालना आपको मुश्किल काम लगता है लेकिन पानी को मथने से मक्खन नहीं निकलता। सभी किस्म के दान, जप–तप, स्नान, पूजा, अपने आप में अच्छे हैं। कुछ न करने से ये सब करना अच्छा है लेकिन ये हमें सच्चाई प्राप्त करवाने में फेल हो जाते हैं। हमारे साथ मुश्किल यह है कि हम कुछ धार्मिक योग्यता और ईनाम पाने की आशा में ये सब धार्मिक कार्य करते हैं।

इस तरह हमें अपने अच्छे कर्मों का फल पाने के लिए इस संसार में वापिस आना पड़ता है। हम भी उस अपराधी की तरह हैं जिसको अपराध करने की आदत है, हम भी उसकी तरह दुनिया के जेलखाने में अपनी

जगह पक्की तरह आरक्षित रखना चाहते हैं। सन्त बिना किसी इच्छा के कर्म करने पर ज़ोर देते हैं, अच्छे कर्मों का अच्छा फल मिलता है।

अच्छे कर्म करके इंसान राजा बन जाएगा या भगवान भी बन सकता है लेकिन जब उसके कर्मों की अवधि पूरी हो जाती है, उसने अपने लिए दूसरा जाल तैयार किया होता है, यह जन्म–मरण के अंतहीन चक्कर में फँसना है। यह सब पानी को मथने जैसा है। दूध से बने दही को मथने से हमें छाछ मिलेगी और उसकी ऊपरी सतह पर मक्खन आ जाएगा लेकिन हममें से कितने लोग ऐसा करने के लिए तैयार हैं? हमारे पास न इसके लिए समय है और न दिलचस्पी है। हम इसके लिए तैयार नहीं हैं क्योंकि हमें यह काम मुश्किल लगता है।

हम संसार और सांसारिक चीज़ों के साथ इतना जुड़ गए हैं कि हमें उनके अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता। हमें एकाग्र होने में और सन्तों के निर्देशों का पालन करने में मुश्किल होती है, हमने आँखों के पीछे छिपे दसवें द्वार तक पहुँचना है। हम हमेशा मुश्किलों का सामना करने की जगह कम से कम मुश्किलों की राह अपनाते हैं।

जीव अभाग कहूं मैं क्या क्या। बाहर भरमे भौ जारा।।

आपका घूमना आपको और भी ज़्यादा दुखी कर रहा है। स्वामी जी को ऐसी आत्माओं पर दया आती है, जिन्हें मन ने कठोर बना दिया है। वास्तव में यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम ग़लत रास्ते पर चल रहे हैं और लगातार चलते जा रहे हैं। इंद्रियों के जाल में फँसकर बाहरी काम–काज में लगे रहने से हम अपने अंदर के असली रास्ते को नहीं पहचानते। हमने अपने आपको और परमात्मा को पहचानना था लेकिन ग़लत दिशा में भटकने के कारण हम अपनी मंज़िल से दूर होते जा रहे हैं।

अंतरमुख जो शब्द कमाई। ता में मन को नहिं गारा।।

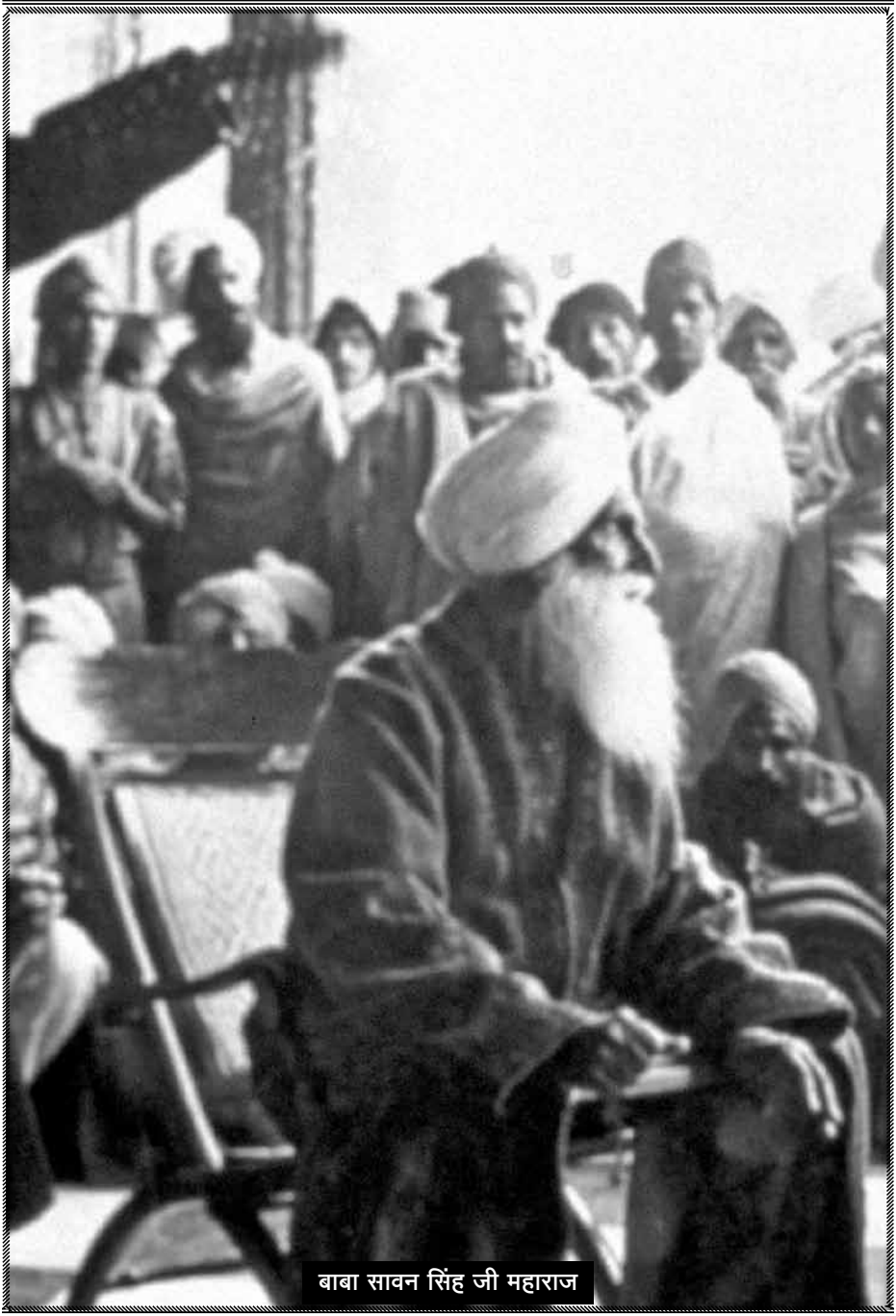

बाबा सावन सिंह जी महाराज

हर इंसान के अंदर शब्द धुन मौजूद है जिसे क़लाम–ए–इलाही, आकाश बाणी, इस्म–ए–आज़म कहा गया है। अफसोस है कि हम इसे सुनते नहीं अगर हम अपने अंदर की धुन को पकड़ें तो परमात्मा की मंत्रमुग्ध कर देने वाली पवित्र धुन हमें ऊपर खींच लेगी और मन शांत हो जाएगा। जैसे ही उस पार जाने का रास्ता खुल जाएगा, आत्मा परमात्मा के रास्ते पर बिना रुके चलने लगेगी।

वेद शास्त्र स्मृत और पुराना। पढ़ पढ़ सब पंडित हारा।।

आप पंडितों और मंत्रों का जाप करने वालों से पूछें कि क्या उन्हें उससे कुछ मिला? सभी धर्म ग्रंथ, वेद–पुराण यही सिखाते हैं कि परमात्मा हमारे अंदर है। भागवत गीता भी यही सच कहती है। पवित्र कुरान में भी कहा गया है कि परमात्मा शाह–रग या हमारे शरीर में गर्दन की नाड़ी से भी ज़्यादा नज़दीक है। यही शिक्षा गुरु नानक देव जी ने भी दी। दोष किताबों में नहीं है, गुरु साहिबानों में भी नहीं, दोष हमारे अंदर है।

हम बचपन से लगातार धर्म ग्रंथों को तोते की तरह पढ़ते आ रहे हैं लेकिन वे हमें क्या सिखाते हैं, हमने अपनी मंजिल कैसे प्राप्त करनी है, इस पर हमने कभी विचार नहीं किया। सिर्फ पढ़ने से कभी कोई सच के नज़दीक नहीं पहुँचा और न ही पहुँच सकेगा। जिस किताब में अच्छा खाना बनाने का तरीका बताया गया हो, उससे न भूख मिट सकती है न स्वादिष्ट खाने की खुशबू आती है और न ही जीभ को स्वाद मिलता है। अगर हम किताब में लिखे निर्देशों के अनुसार खाना तैयार करें तो ये सब अपने आप ही हो जाएँगे।

क्राइस्ट ने कहा है, ''आप वचनों पर चलने वाले बनें।'' गुरु नानक देव जी भी कहते हैं, ''आप सालों साल, महीने दर महीने और जीवन की हर साँस के साथ भी पढ़ोगे तो भी कुछ हासिल नहीं होगा। केवल एक ही चीज़ मायने रखती है, शब्द के साथ मिलाप, बाक़ी सब बेकार है।''

मैं कई सिख भाईयों से मिला हूँ जो नित नियम से रोज़ाना गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करते हैं। मैंने उनसे पूछा क्या उन्होंने परमात्मा का प्रकाश देखा है जिसकी महिमा गुरु ग्रंथ साहिब में की गई है। उनका सिर शर्म से झुक गया और बोले, 'नहीं।' अगर इतना जाप भी परमात्मा के प्रति प्रेम नहीं जगा सकता तो ऐसा पाठ करने का क्या फायदा? कोरा किताबी ज्ञान जंगल जैसा होता है और परिणाम देने में बुरी तरह से फेल हो जाता है।

बिन सतगुरु और बिना शब्द सुर्त। कोई न उतरे भौ पारा।।

कोई भी जीवन के डरावने सागर को पार नहीं कर सका। इतना कुछ कहने के बाद, स्वामी जी इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कोई भी सतगुरु के बिना और 'सुरत–शब्द' योग के अभ्यास के बिना जीवन के सागर को पार नहीं कर सकता। यह बहुत ज़रूरी अंदरूनी ज्ञान है और कोई भी इसमें माहिर नहीं है। यह हमें अंदर गहराई में जाने के लिए प्रेरित करता है जिससे कि हम निर्मल प्रकाश के रत्न को खोज सकें।

सतगुरु की दया के बिना हम अपने अंदर छिपे खजाने को न जान सकते हैं, न उसका अभ्यास कर सकते हैं, न अनुभव कर सकते हैं और न ही उसे प्राप्त कर सकते हैं। आध्यात्मिक खजाना हमारे अंदर है लेकिन हम अपनी जिंदगी भिखारियों की तरह गुज़ारते हैं, सारा जीवन थोड़े से पैसों के लिए भीख माँगते हैं। इंसानी शरीर में मौजूद महान धन से अनजान हैं जो वास्तव में परमात्मा का मंदिर है।

मुस्लिम फ़कीर भीख अपने आप से कहते हैं, ''हे भीख, कोई गरीब नहीं है सबने अपनी कमरबंद में एक अनमोल रत्न छिपा रखा है। वह कमरबंद को खोलना नहीं जानता इसलिए वह भीख माँगता फिरता है। हम अपने आप में हद से ज़्यादा अमीर हैं लेकिन हमें अंदर जाना नहीं आता जिसका नतीजा हमारी धन–संपत्ति अंदर ही दबी रह जाती है और हम कोल्हू के बैल की तरह सारा दिन मेहनत करते रह जाते हैं।''

यही बात भाखी मैं चुन कर। अब तो मानो गुरु प्यारा।।

स्वामी जी महाराज की पूरी शिक्षा का सार 'सुरत और शब्द' है, आत्मा और परमात्मा इंसानी जामे में हैं लेकिन मंजिल तक पहुँचने के लिए उनके साथ जुड़ने की ज़रूरत है।

सन्त कबीर इस बारे में कहते हैं, ''हे इंसान, तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम अपनी सुरत को शब्द के साथ जोड़ो। किताबें पढ़ने से मुक्ति नहीं मिलती।'' गुरु नानक देव जी इसे इस तरह समझाते हैं जैसे कमल का फूल गंदे तालाब में अपनी जड़ें जमाकर अपना सिर ऊँचा रखता है, हर समय पानी में रहने वाली बत्तख जब चाहे ऊँची उड़ान भरकर खुद को सूखा रखती है, उसी तरह आप भी प्रभावित न हों, दूषित न हों।

नाम की मदद से इंसान सांसारिक काम काज करते हुए मुक्ति प्राप्त कर सकता है। यह पक्का है कि पूरे संसार में घूमना, तीर्थ स्थानों की यात्रा करना, भजन गाना, पाठ करना, धर्म ग्रंथ पढ़ना, सभी रीति –रिवाज पूरा करना, ये सब आपको कहीं नहीं पहुँचा सकते। ये ज़मीन तैयार कर सकते हैं और कुछ समय के लिए मन को शांति दे सकते हैं लेकिन केवल नाम ही आपको आपकी मंज़िल–परमात्मा के साम्राज्य सचखंड ले जाएगा इसलिए आत्मा को नाम से जोड़ने की ज़रूरत है। आपकी आत्मा के परमात्मा ने आपको चाबी दी है, आप अपने पापों को पलटें और एक बार अपने आपसे ऊपर उठें।

राधास्वामी कहा बुझाई। सुरत चढ़ाओ नभ द्वारा।।

अंत में स्वामी जी महाराज हमें अपनी आँखों के पीछे केंद्र बिंदु पर ले जाने के लिए प्रेरित करते हैं क्योंकि यहीं से परमात्मा तक पहुँचने का रास्ता है। एक मुस्लिम सन्त शमस तबरेज़ इस सत्य के बारे में बताते हैं, ''धुन हर पल मेरे अंदर केंद्र बिंदु की तरफ़ दौड़ रही है, मैं इसकी गूंज

सीधा अपने अंदर सुनता हूँ। मैं नहीं जानता कि यह कहाँ से नीचे आ रही है फिर भी यह मुझे मेरे घर वापिस बुला रही है।''

महान दार्शनिक एमर्सन कहते हैं, ''अंदर खटखटाएँ और अंदर खोजें।'' हम कहीं भी जाएँ, एक धुन हमें हमेशा सुनाई देती है, हर समय हमारे साथ है। युगों–युगों से परमात्मा से बिछड़ी हुई आत्मा इस पवित्र अमृत को पीकर एक बार फिर से परमात्मा के साथ जुड़ सकती है।

मूसा के बारे में कहा जाता है कि जब उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया तो वह चमक उठा। बेशक सभी गुरु सत्य के पथप्रदर्शक होते हैं और समय की रेत में खोए हुए राहगीरों को रास्ता दिखाते हैं इसलिए हमारा कर्तव्य है कि उन पर विश्वास करें, उनके बताए मार्गदर्शन पर चलें।

अगर मैं छिपी हुई विद्या का प्रचार करूँ तो इस दुनिया में एक भी सांसारिक विचारधारा वाला इंसान नहीं बचेगा। जब हम मुसीबतों से घिर जाते हैं, जीवन के तूफ़ानों में फँस जाते हैं, केवल तभी हम सत्य की तलाश करते हैं। परमात्मा हमारे अंदर है लेकिन हमें बाहर निकालकर बज्र का किवाड़ बंद कर दिया है।

महात्मा आत्मा को उसके सच्चे घर ले जाकर मुक्ति दिलाने के लिए जीवित गुरु के जामे में आते हैं और नाम की कुंजी से विशाल द्वार को खोलकर अंदर परमात्मा के स्वराज्य को खोलते हैं। इंसान खुद ही अपने नीचे गिरने का कारण है, केवल परमात्मा रूपी इंसान ही उसे छुटकारा दिलवा सकता है।

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं कि पाँच मधुर धुनें हमारे अंदर बाजे की तरह बज रही हैं। हमें अंदर अपनी आत्मा को उस धुन के साथ जोड़ना होगा लेकिन अफ़सोस, हम बेकार के कामों में कीमती अवसर बर्बाद कर रहे हैं। इसलिए कबीर कहते हैं, ''किसी चीज़ को वहाँ क्यों ढूँढना जहां वह है ही नहीं, उसे ठीक से ढूँढें, आप उसे ज़रूर ढूँढ लेंगे।''***

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर

30 अप्रैल 1977 कबीर साहब की बानी अमेरिका

गुरु हैं बड़ गोबिंद तें, मन में देखु बिचार।
हरि सुमिरै सो वार है, गुरु सुमिरै सो पार।।
गुरु सीढ़ी तें ऊतरै, सबद बिहूना होय।
ताको काल घसीट है, राखस कै नहिं कोय।।

कबीर साहब रोजाना सतसंग में गुरु की महिमा सुनाते हैं कि गुरु से बड़ा कोई नहीं है। गुरु, गोविंद से बड़ा है। गुरु को एक पल याद करना भगवान को लाख पल याद करने से ज्यादा है। अब दिल में यह सवाल पैदा होता है कि भगवान ने सारी दुनिया को बनाया है, गुरु को भी भगवान ने ही बनाया है फिर गुरु भगवान से बड़ा कैसे हो सकता है?

हुजूर मिसाल देकर समझाया करते थे कि जिस तरह प्यारा बेटा अपने पिता के हुक्म में रहता है तो पिता बेटे की तारीफ करता है कि यह मेरा काबिल बेटा है, मुझसे भी समझदार है। सन्त परमात्मा नहीं होते लेकिन परमात्मा के सारे गुण सन्तों में आ जाते हैं। सन्त, परमात्मा के शरीक बनकर नहीं आते, परमात्मा के प्यारे बेटे बनकर आते हैं और परमात्मा को अपने प्यार में बाँध लेते हैं।

परमात्मा कहता है कि मेरी बाँधी हुई को भक्त छुड़वा सकता है लेकिन भक्त की बाँधी हुई को मैं भी नहीं छुड़वा सकता। अगर भक्त मुझे भी बांध दे तो मैं उससे पूछ नहीं सकता कि मुझे किस अपराध में बांधा है?

कबीर साहब कहते हैं कि ऐसा सतगुरु जिसे मालिक की तरफ से इतनी तारीफ मिली है जो उसके दिए हुए 'शब्द-नाम' की कमाई छोड़कर

किसी और रास्ते पर चल पड़ते हैं तो उन्हें भगवान और यम दोनों माफ नहीं करते। यम भी उन्हें बालों से पकड़ कर घसीटते हैं। सन्त जब भी आते हैं वे अपने सेवकों को नाम की कमाई पर जोर देते हैं कि कम से कम ये ऊपर के मंडलों में, मालिक के दरबार में जाकर हमारी तारीफ, हमारी महिमा देखें।

अहं अगिननिस दिन जरै, गुरु से चाहै मान।
ताको जम न्योता दियो, होउ हमार मिहमान।।

हमारे अंदर दिन–रात हौमें की आग भड़क रही है। हम सतगुरु से भी मान चाहते हैं कि जब हम गुरु के पास जाएँ गुरु हमारा आदर–मान करें। जब अहंकार में हम यह चाहते हैं तो यम हंसता है और कहता है, ''कोई बात नहीं तू मेरा ही मेहमान है, तूने मेरे पास ही आना है।''

गुरु से भेद जो लीजिए, सीस दीजिए दान।
बहुतक भोंदु बह गये, राख जीव अभिमान।।

कबीर साहब कहते हैं कि जब आप गुरु से नाम लेते हैं, ज्ञान लेते हैं तो उस नाम की दक्षिणा में कम से कम सेवक अपना शीश दे दे लेकिन हम अहंकार में बह जाते हैं, सिर देना नहीं जानते। सिर देने का मतलब यह नहीं कि हमने अपनी गर्दन काटकर गुरु के आगे रख देनी है या वे हमारे सिर के भूखे हैं। चाहे दुख आए, चाहे सुख आए, जब एक बार हमारा सिर सतगुरु के चरणों में झुक गया है तो यह सिर कभी भी दुनिया की शक्तियों के आगे न झुके, सिर्फ अपने सतगुरु के आगे ही झुके। जो मांगना है सतगुरु से ही मांगे और सतगुरु से गुरु को ही मांगना चाहिए।

महाराज सावन सिंह जी कहते थे, ''अगर आपने कोई वस्तु बनवानी है तो मिस्त्री को अपने घर ले आएं फिर उससे जो मर्जी वस्तु बनवा लें।

अगर हम भी गुरु को अपने अंदर जगह दे दें, प्रकट कर लें फिर हम जो मर्जी वस्तुएं मांग सकते हैं, वे हमारी सारी जरूरतें पूरी करेंगे।''

गुरु समान दाता नहीं,जाचक सिष्य समान।
तीन लोक की सम्पदा, सो गुरु दीन्हा दान।।

अब कबीर साहब कहते हैं कि दुनिया में गुरु जैसा दाता नहीं है। गुरु ने हमें तीन लोक की दौलत बक्शी है लेकिन हमें पता नहीं कि यह दौलत कितनी बड़ी है क्योंकि हम उस दौलत की कद्र नहीं कर रहे।

आप देखें, जिन लोगों ने कमाई की, अंदर जाकर उस दौलत को हासिल किया, अपने सतगुरु से जुड़े उनसे पूछें कि दुनिया की धन–दौलत की कीमत ज्यादा है या नाम की कीमत ज्यादा है? वे बताएंगे की नाम की कीमत के मुकाबले दुनिया की धन–दौलत तुच्छ भी नहीं है क्योंकि दुनिया की धन–दौलत यहीं रह जानी है, हमारे साथ नहीं जानी। जिस चीज़ ने हमारा साथ ही नहीं देना उसकी क्या कीमत है? नाम ने हमारी रक्षा करनी है, नाम ने हमारे साथ रहना है और नाम हमेशा ही कायम है। गुरु साहब कहते हैं:

नाम रहओ साधू रहओ रहओ गुरु गोबिंद।
कहे कबीर इस जगत में जिन जपयो गुरु मंत्र।।

जम गरजे बल बाघ के, कहै कबीर पुकार।
गुरु किरपा ना होत जो, तौ जम खाता फार।।

कबीर साहब कहते हैं, ''आप ऐसा न कहें कि यम ने हमें कुछ भी नहीं कहना। यम जीवों को देखकर ऐसे गरज रहा है जैसे मस्त हुआ शेर गर्जता है अगर गुरु नहीं मिलते तो वह हमें भी फाड़कर खा जाता।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि ऐसा न कहें कि काल और यम नहीं हैं, वह हर एक जीव का पूरा हिसाब–किताब लेता है।

गुरु पारस गुरु परस है, चंदन बास सुबास।
सतगुरु पारस जीव को,दीन्हा मुक्ति निवास।।

गुरु पारस हैं जिसे भी छू लेते हैं उसे पारस बना लेते हैं।

अबरन बरन अमूर्त जो, कहो ताहि किन पेख।
गुरु दया तैं पावई, सुरत निरत कर देख।।
पंडित पढ़ गुन पच मुए, गुरु बिन मिलै न ज्ञान।
ज्ञान बिना नहिं मुक्ति है, सत सबद परमान।।

कबीर साहब कहते हैं, ''दुनिया पढ़ाई–लिखाई को ज्ञान समझ बैठी है। स्कूल में पोथियाँ पढ़ने से हमारे दिमाग में खुलापन आ जाएगा और हम इस संसार में शोभा पाएंगे। पोथियाँ जो बताती हैं, उस पर अमल करने से ही हम ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

ज्ञान ध्यान धुन जाणीऐ अकथ कहावै सोइ।

'शब्द–नाम' के ज्ञान से हमारी मुक्ति होनी है, वह अकथ है उसे कहा नहीं जा सकता। वह लिखने–पढ़ने का मजमून नहीं,हर इंसान के अंदर है।

मूल ध्यान गुरु रुप है, मूल पूजा गुरु पांव।
मूल नाम गुरु बचन है, मूल सत्य सतभाव।।

सारी पूजा का मूल गुरु के स्वरूप का ध्यान और गुरु के चरणों से प्यार है। गुरु हमें जो वचन बताते हैं वही मूल नाम है। गुरु वह नाम बताते हैं जिस नाम ने दुनिया की रचना पैदा की है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

गुर का बचन सदा अबिनासी, गुर कै बचन कटी जम फासी।।

हम उस वचन को मामूली समझते हैं लेकिन जिन्होंने उस वचन की कमाई की,उन्होंने यम की फांसी काटकर मुक्ति प्राप्त कर ली। गुरु हमेशा कहते हैं कि मैं आपके अंदर इस स्वरूप में बैठा हूं, आओ, मुझसे मिलो।

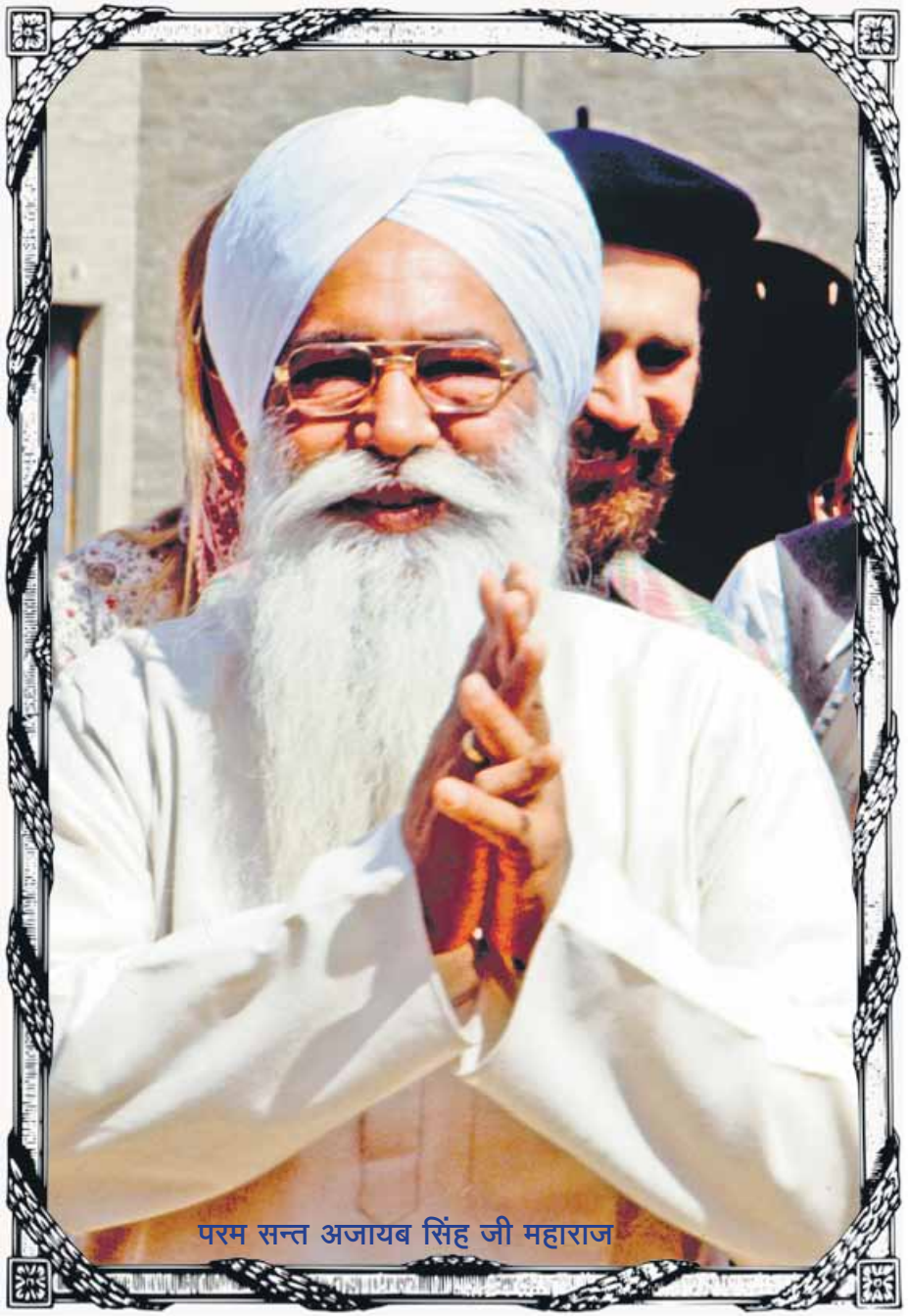

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

कहै कबीर तज भरम को, नन्हा व्हैके पीव।
तजि अहं गुरु चरन गहु, जम से बाचै जीव।।

कबीर साहब कहते हैं, ''तू दिल से भ्रम निकालकर सतगुरु के वचन की कमाई कर, तभी तू यम से बच सकता है।''

तीन लोक नौ खण्ड में, गुरु तें बड़ा न कोइ।
करता करै न कर सकै, गुरु करै सो होइ।।

काल की यह रचना सात द्वीप और नौ खण्ड में बँटी हुई है। इन खण्डों और मंडलों में सतगुरु से बड़ी कोई ताकत नहीं। भगवान ने भी उन्हें हुक्म दिया है कि तू जो चाहे कर सकता है। गुरु हमें नाम देकर मालिक से मिलाते हैं। सन्तों को उस मालिक ने बहुत ताकत बक्शी होती है लेकिन दुनिया में उन्होंने कभी भी अपनी ताकत का दिखावा नहीं किया बल्कि सन्तों को बड़े-बड़े कष्ट दिए गए। किसी को गर्म तवी पर बिठाया गया, तब भी उन्होंने खामोश होकर अपना वक्त बिताया।

जब गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवी पर बिठाया गया उस समय लाहौर में रहने वाला उनका दोस्त मियां मीर अच्छी करामात वाला फकीर था। मियां मीर ने उनसे कहा, ''गुरुदेव, आप मुझे हुक्म दें, मैं लाहौर की ईंट से ईंट बजा देता हूं।'' गुरु अर्जुन देव जी ने कहा, ''मियां मीर, यह तो मैं भी कर सकता हूं लेकिन उस मालिक का भाणा भी मानना पड़ता है।''

गुरु तेग बहादुर जी को दिल्ली में कत्ल करने से पहले औरंगज़ेब ने कहा, ''करामात दिखाओ नहीं तो मैं तुम्हें कत्ल करता हूं।'' गुरु तेग बहादुर जी ने कहा, ''बादशाह, हम कत्ल होना ही जानते हैं, हम कोई करामात नहीं दिखाते। हम मालिक के शरीक नहीं बनते, हम उस मालिक के भाणे में रहकर ही खुश हैं।''

हुजूर महाराज के वक्त हमने ऐसी कई घटनाएँ देखी हैं कि जब लोगों ने आकर कहना, ''सच्चे पातशाह, आपने हमारा यह काम किया।'' हुजूर कहते, ''मैं तो आपके जैसा ही हूं, मैंने कुछ नहीं किया।''

कबीरा हरि के रूठते, गुरु के सरने जाइ ।
कहै कबीर गुरु रूठते,हरि नहिं होत सहाइ ।।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर हरि रूठ जाए तो सेवक के पास गुरु के चरण हैं अगर गुरु रूठ जाए तो हरि सहायता नहीं करता क्योंकि हरि ने गुरु को बनाया है।''

बुल्लेशाह के गुरु इनायत शाह थे। बुल्लेशाह के यहां शादी थी। उन्होंने इनायत शाह से विनती की, ''सतगुरु, आपका वहां होना जरूरी है।'' बुल्ले शाह ने कमाई में अच्छी तरक्की की हुई थी। इनायत शाह ने सोचा कि देखूं बुल्ला कुछ समझा भी है, इसे मेरे साथ कुछ प्यार भी है? इनायत शाह खुद तो शादी में नहीं गए, उन्होंने अपना एक सेवक भेज दिया।

अब बुल्लेशाह ने सोचा कि यह सेवक अराइयों का लड़का है। इनायत शाह आते तो हम उन्हें अच्छा समझते। उन्होंने अराइयों का लड़का समझकर उस सेवक के साथ कोई प्यार–मोहब्बत नहीं किया। जब उस सेवक ने आकर इनायत शाह को बताया, ''हे सतगुरु, उन्होंने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया।'' तब इनायत शाह ने कहा कि बुल्ले के घर का तो पानी पीना भी गुनाह है। इतना कहते ही बुल्लेशाह के ऊपर से नाम का रंग उतर गया। बुल्लेशाह ने आकर इनायत शाह के आगे मिन्नतें कीं, यहां तक कि गाने वालों का भेष धारण करके इनायत शाह के आगे खूब नाचा। बुल्लेशाह को नाचते हुए देखकर इनायत शाह ने उसे पहचान लिया और कहा, ''तू बुल्ला है?'' बुल्लेशाह ने कहा, 'हां, हूँ तो बुल्ला पर भूला हुआ हूं।'' और इस तरह अपनी नाम की कमाई वापिस करवाई।

गुरु की आज्ञा आवई, गुरु की आज्ञा जाय।
कहै कबीर सो संत है, आवागवन नसाय ।।

कबीर साहब कहते हैं कि जो अपना जीवन गुरु की आज्ञा में ढालता है, गुरु की आज्ञा में उठता–बैठता, सोता–जागता है, जिसने अपना दीन–ईमान गुरु को ही समझ लिया है वही सन्त है। जो सपने में बड़बड़ा कर भी गुरु–गुरु करता है, जागते हुए भी गुरु–गुरु करता है। वह गुरु का रूप हो जाता है, गुरु ही बन जाता है।

जिस तरह राधा का कृष्ण के साथ प्यार था, वह भूल गई थी कि मैं राधा हूं। वह कृष्ण का रूप ही हो गई और सखियों से पूछने लगी, ''कहीं राधा देखी है?'' सखियां हंसकर कहने लगी, ''राधा तो तू खुद ही है।'' राधा ने कहा, ''मैं तो कृष्ण हूं।''

इसी तरह जो सेवक सतगुरु के नाम की कमाई करता है, आप उससे पूछकर देख लें, ''क्या तू अपने नाम का मिशन चलाएगा?'' वह कहेगा, ''मेरा नाम क्या है? मैं तो सतगुरु का काम कर रहा हूं।'' जब कोई ऐसे शिष्य की तारीफ करता है तो उसे बुरा लगता है। वह शिष्य कहता है, ''मेरे गुरु की तारीफ क्यों नहीं करते?'' क्योंकि वह खुद को भूला होता है। वह भी राधा की तरह खुद को कृष्ण समझता है। जहां देखता है वहां गुरु ही गुरु नजर आता है। वह लोगों से भी कहता है, ''गुरु–गुरु करें, गुरु बिना कुछ भी नहीं है।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर गुरु बिना मैं नाहीं होर।

थापन पाई थिर भया, सतगुरु दीन्ही धीर।
कबीर हीरा बनजिया, मानसरोवर तीर।।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

पवित्रता

30 दिसम्बर 1987 | 16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी :– *सन्तमत में पवित्रता का क्या सिद्धान्त है? हम किस तरह से दुनियादारी के सूक्ष्म असर को बेअसर कर सकते हैं? शरीर पवित्र रखने के लिए आप हमें क्या हिदायत देंगे?*

बाबा जी :– सतसंगों में पवित्रता के बारे में बहुत कुछ बोला जाता है। मुझे अफसोस है कि आप लोग सन्तबानी मैगजीन मँगवाते तो हैं लेकिन पढ़ते नहीं। सन्तबानी मैगजीन में इस बारे में बहुत से सवाल–जवाब छप चुके हैं, अगर पढ़ें तो आपको काफी मदद मिल सकती है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

सच्चो ओरे सबको ऊपर सच विचार।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सच सबसे ऊँचा है लेकिन सच्चा–सुच्चा जीवन इससे भी ऊँचा है।'' मैं फिर भी आपको समझाने की कोशिश करता हूँ। हम दिन–रात ख्यालों में घूमते रहते हैं। बैठे–बैठे कभी किसी के प्रति नफरत करते हैं, चाहे उससे हजारों मील दूर हैं। कभी किसी के प्रति प्यार करते हैं फिर और दौर चल पड़ता है। इसी तरह कभी बैठे–बैठे विषय भोगते हैं, कभी किसी को मारते हैं, यही अपवित्र ख्याल हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे,''आमतौर पर अच्छी आत्माओं को हिन्दुस्तान में ही जन्म दिया जाता था क्योंकि यहाँ मीट–शराब का बोलबाला नहीं था। इस देश में ऋषियों–मुनियों के अवतार हुए हैं, इसे ऋषियों–मुनियों का देश कहा जाता है।''

आमतौर पर उस समय के लोग चाहते थे कि जिंदगी को पवित्र बनाना है, विषय–विकारों से बचना है। थोड़े से धन पर ही सब्र करना है। शादी के बाद पतिव्रता धर्म में रहना है।

आज ऐसे लोगों की कमी हो गई है। अब हिन्दुस्तान में भी पश्चिम के रीति–रिवाज चल रहे हैं। मीट–शराब का बोलबाला हो रहा है। कमाई वाले और पवित्र जीवन जीने वाले लोग बहुत कम मिलते हैं। आज ऐसे–ऐसे सुंदर आश्रम बन गए हैं कि वहाँ जाने वाले प्रेमियों को हर तरह की सुविधाएं मिलती हैं। आप सोच सकते हैं कि जहाँ ऐसी सुविधाएं हों, अच्छे से अच्छे खाने मिलते हों, वहाँ कौन भजन करता है।

जब मैंने जलधारे किए, धूणे तपाए तब मुझे ऐसे साधुओं से मिलने का मौका मिला जो दिन–रात मन–इन्द्रियों के साथ संघर्ष करते थे। वे ज्यादा खाना नहीं खाते थे, रातों को जागते थे। कबीर साहब ने कहा है:

सुखिया सब संसार है, खाए और सोए, दुखिया दास कबीर है, जागे और रोए।।

एक बार वैंकुवर में पप्पू की तबीयत खराब होने की वजह से शर्मा इंटरव्यू करवा रहा था। वहाँ एक ऐसा प्रेमी आया जो हिन्दुस्तान के अच्छे–अच्छे आश्रमों में रह चुका था। उसकी बातचीत हमारे किसी सतसंगी के साथ हुई तो उसे जानकारी मिली कि हमारे आश्रम में सुबह तीन बजे से दिन शुरू होता है और शाम होते ही सो सकते हैं। भजन–सिमरन के अलावा और कोई कार्यक्रम नहीं होता।

यह जानकर उसके दिल में प्यार उठा, उसने मुझसे पूछा , ''क्या मैं आपके आश्रम में भजन–अभ्यास के लिए आ सकता हूँ?'' मैंने उससे कहा, ''मैं जानता हूँ कि तू अच्छे–अच्छे आश्रमों में रह चुका है, वहाँ अच्छे–अच्छे आदमियों ने तेरा इंतजाम किया है अगर तू भूख–प्यास काट सकता है तो बड़े शौक से वहाँ आ सकता है।'' यह सुनकर वह खामोश हो गया।

सन् 1978 में एक सेठ साहब बहुत मुश्किल से 77 आर.बी. वाले आश्रम में आए। वह आश्रम भी इस आश्रम की तरह जंगल में था। मैंने उससे कहा, ''आपको यहाँ पहुँचने में बहुत तकलीफ उठानी पड़ी, मुझे माफ करें।'' उस सेठ ने कहा, ''मैं आपको माफ नहीं करता। मैं आपको

तभी माफ करूँगा जब आप अपना आश्रम चाहे हजार मील दूर बनाएं! लेकिन बनाएं सड़क पर। जितना भी पैसा लगेगा, मैं लगाने के लिए तैयार हूँ।'' मैंने उससे कहा, ''यह मेरे बस में नहीं।''

प्यारेयो, आपके कर्म अच्छे हैं। आप बार–बार यहाँ आते हैं। इस धरती की मिट्टी आपको प्यारी लगती है। हिन्दुस्तान के आदमी दोबारा यहाँ आकर खुश नहीं होते। वे कहते हैं कि वहाँ तो कोई सुविधा ही नहीं, जंगल में बैठे हैं।

अगर आप पवित्रता रखेंगे तो आपकी सेहत और आपके ख्यालों पर अच्छा असर पड़ेगा। आप भजन–सिमरन में जल्दी कामयाब होंगे।

एक प्रेमी :– *सन्त जी, आप सेवक की करनी और गुरु की दया के बारे में कुछ बताएं। महाराज कृपाल कहा करते थे कि हमें 'निष्काम करनी' करनी चाहिए?*

बाबा जी :– करनी और दया दोनों साथ–साथ चलती हैं। अगर गुरु दया करें और हम करनी न करें तो हम कामयाब नहीं हो सकते। सन्त–सतगुरु दया का रूप होते हैं। वे भूले–भटके सेवकों पर सदा ही दया करते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

साहिब गँवाया लोडिए, नफर वगाड़े नित।

सन्त–सतगुरु बिगड़ी सँवारकर खुश होते हैं। वे इस बात पर फक्र म हसूस करते हैं कि इस सेवक के ख्याल बिगड़ गए थे, अब ठीक हैं लेकिन सेवक सदा ख्याल बिगाड़कर ही खुश होता है। हम अपने अंदर झाँककर देख सकते हैं कि हम मन का हुक्म मानते हैं, हमारा मन जो चाहता है, हमसे करवा लेता है।

मैं महाराज सावन के समय में देखता रहा हूँ कि जीव अनेकों गुनाह करके खड़े होकर कह देते, ''मैंने बहुत गुनाह किए हैं, माफी चाहता हूँ।''

महाराज सावन सिंह जी ने कभी नहीं पूछा था कि क्या गुनाह किए हैं? ऐसा ही मैंने परम पिता कृपाल के समय में भी देखा। मेरे साथ भी ऐसा ही होता है। सेवक अपने बहुत से ऐब बताता है कि मैं ये सब करता हूँ लेकिन मैं सेवक को प्यार से कहता हूँ, ''तू सिमरन कर अभ्यास कर, मेरी हमदर्दी तेरे साथ है। तू उठ! तेरी पीठ पर तेरे गुरु का हाथ है।''

प्यारेयो, यहाँ आने से पहले आपको संदेश दिया गया था कि आप अपनी तैयारी करके आएं। अगर आप तैयार होकर आएंगे तो उसमें वस्तु डालनी बहुत आसान हो जाएगी। जो तैयार होकर आते हैं, वे मुझे इंटरव्यू में अपने अच्छे अनुभव बताते हैं, मुझे खुशी होती है।

ऐसे भी प्रेमी आ जाते हैं जो चुटकियाँ बजाते हैं, खाली ही चले जाते हैं। ऐसे भी प्रेमी आते हैं जो कहते हैं कि साल भर के लिए वस्तु लेने आए हैं। प्रेमी ऐसा भी कहते हैं कि छह महीने के लिए वस्तु लेने आए हैं। ये गुलाम मन की माँगे हैं। जब देने वाला हमें जिंदगी की रोटी देने के लिए तैयार है तो हम भूल क्यों करते हैं।

आमतौर पर जब हम भजन में बैठते हैं, दुनिया की ख्वाहिशों के बारे में सोचना शुरू कर देते हैं। कोई बच्चा माँगता है। कोई पत्नी माँगता है। कोई धन माँगता है। कोई पत्नी कहती है कि पति के ख्याल अच्छे हो जाएं। कोई कहता है कि मेरी बीमारी दूर हो जाए। हमारा मन दफ्तर खोलकर बैठ जाता है, प्लेनिंगें चलती रहती हैं। एक घंटे का तो पता ही नहीं चलता। सोचकर देखें, क्या हम भजन कर रहे हैं?

हमारे अंदर ये ख्वाहिशें हमारा मन पैदा करता है, हम इन्हें सतगुरु से पूरा करवाना चाहते हैं। हम सतगुरु के कहे मुताबिक नहीं चलते बल्कि सतगुरु से कहते हैं कि आप हमारे कहे मुताबिक चलें। सोचकर देखें; हमारे अंदर सतगुरु के लिए कितना प्यार और कितना इश्क है?

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मुस्लिम फ़कीर भीख अपने आप से कहते हैं, ''हे भीख, कोई गरीब नहीं है सबने अपनी कमरबंद में एक अनमोल रत्न छिपा रखा है। वह कमरबंद को खोलना नहीं जानता इसलिए वह भीख माँगता फिरता है। हम अपने आप में हद से ज़्यादा अमीर हैं लेकिन हमें अंदर जाना नहीं आता जिसका नतीजा हमारी धन-संपत्ति अंदर ही दबी रह जाती है और हम कोल्हू के बैल की तरह सारा दिन मेहनत करते रह जाते हैं।''